REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2018

''छायावादोत्तर काव्य में बच्चन का योगदान''

Dr. Kusam lata
Astt.Professor, SVSD College Bhatoli,
Distt UNA (Himachal Pradesh)

प्रस्तावना :–

हिन्दी साहित्य जगत् में छायावाद के उपरान्त या उसके समानान्तर सन् 1930 के आसपास जो काव्य–प्रवृत्ति विकसित हुई उसे 'उत्तर–छायावाद' की संज्ञा दी गई। छायावाद का 'दूसरा उन्मेश' 'उत्तर–छायावाद' के रूप में उभर कर आया जिसमें प्रगतिवाद के लिए ठोस भूमि तैयार करने में सराहनीय भूमिका अदा की। डॉ0 अमरनाथ ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली' में कहा है, ''उत्तर छायावाद'' अपने सामान्य अर्थ में छायावाद के उत्तर–चरण का बोध कराता है किन्तु प्रयोग की दृष्टि से इसके अन्तर्गत छायावादोत्तर रचित राष्ट्रीय, सांस्कृतिक कविताएं तथा वैयाक्तिक प्रगीतों की वह धारा आती है जिसे जवानी व मस्ती का काव्य कहा गया है।''[1]

छायावादोत्तर काल के प्रमुख स्तम्भ डॉ0 हरिवंशराय बच्चन का जन्म 27 नवम्बर 1907 को इलाहाबाद के प्रयाग जिले के चक मोहल्ले में हुआ। इनके पिता का नाम प्रतापनारायण तथा माता का नाम सुासती था। बड़े जप तप तथा हरिवंशपुराण के श्रवण के बाद इनके माता–पिता को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। इनकी माता ने इनका घरेलू नाम 'बच्चन' रखा। बच्चन शब्द अवधी भाषा का है। जिसका अर्थ है – बछड़ा। अपनी मां के द्वारा दिए गए स्नेहपूर्ण नाम को इन्होंने अपने साहित्यिक नाम के रूप में अपना लिया। बच्चन ने अपने काव्य से साहित्य जगत को मोहित किया। मधुकाव्य के सृजन के बाद बच्चन जन–जन के कवि बन गए। हिन्दी कविता और साहित्य के इस मूर्धन्य कवि के जीवन का सूर्यास्त 18 जनवरी 2003 को हो गया। अपने काव्य सृजन से लोगों के दिलों में जगह बनाने वाले बच्चन संसार में सदा अमर रहेंगे। बच्चन ने अपनी कृति मधुशाला से सारी दुनिया को मदहोश कर दिया। हर व्यक्ति इनके काव्य रस में डूबना चाहता है। छायावादोत्तर काव्य छायावादी काव्य और उसके समानान्तर लिखा गया। यह आधुनिक सृजनशीलता की श्रेष्ठतम उपलब्धि है। अतः कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय चेतना और जवानी की मस्ती इस काव्य की विशेषताएं हैं। ये दोनों ही विशेषताएँ बच्चन के काव्य में समग्र रूप से झलकती है। उनके काव्य में कहीं निराशा है, कहीं राष्ट्र के प्रति सग्र राष्ट्रीय चेतना तथा कहीं श्रेष्ठ राजनेताओं का वर्णन और कहीं पर भ्रष्ट राजनेताओं पर करारा तीखा व्यंग्य किया है। बच्चन की रचनाओं के सम्बन्ध में चन्द्रगुप्त विद्यालंकार ने 'आज के हिन्दी कवि' नामक पुस्तक में लिखा है, ''बच्चन जी अपनी रचनाओं की प्रेरणा का स्त्रोत अपने जीवन की अनुभूतियों को ही स्वीकार करते हैं।''[2] बच्चन ने अपने काव्य में हर प्रकार के विषय को स्थान दिया है।

प्रेम सौन्दर्य और यौवन के प्रति आकर्षण हाला के माध्यम से ईश्वरीय प्रेम की कल्पना की गई है। हालावाद का विवेचन करते हुए आलोचकों का ध्यान केवल छायावादी काव्यधारा में ही केन्द्रित होकर रह जाता है। बच्चन साहित्य 'हालावादी' के प्रतीकात्मक रूप में हिन्दी जगत में प्रविष्ट हुआ है। उनकी कविता विद्रोह, नवजीवन की भावनाओं का सन्देश लिए हुए है। आपने अपनी रचनाओं के द्वारा हिन्दी कविता में असाधारण माधुर्य भाव एवं सहज भाव का समावेश किया है। उनकी हाला विद्रोह एवं नवजीवन का प्रतीक है। किसी

[1] डॉ0 अमरनाथ : 'हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली' (पृ0 81)
[2] चन्द्रगुप्त विद्यालंकारः 'आज के हिन्दी कवि, पृ0–15

साहित्यिक रचना के मुख्य पहलू होते हैं – उसके भाव एवं भाषा, कल्पना शक्ति, लय एवं तारतम्यता। ये सभी गुण बच्चन के साहित्य में दृष्टिगोचर होते हैं। इनके काव्य में विषय व्यापकता पर्याप्त रूप से देखी जा सकती है। बच्चन का छायावादोत्तर काव्य जगत में एक महत्त्वपूर्ण और अद्वितीय योगदान रहा है। यदि हम बच्चन के गद्य साहित्य को अनदेखा कर दें तो भी उनका काव्य ही छायावादोत्तर काव्य में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनका जितना हिन्दी साहित्य जगत में जितना महत्वपूर्ण काव्य है, उतना ही महत्त्वपूर्ण गद्य भी है। बच्चन का काव्य पूर्ववर्ती तथा परवर्ती दो रूपों में उद्धृत हुआ है। जीवन की परिस्थितियों के अनुसार उनका काव्य जगत् उजागर होता है। इसलिए कहा जा सकता है कि बच्चन का काव्य उनके जीवन की यथार्थ अनुभूतियाँ हैं।

बच्चन का पूर्ववर्ती काव्य भावना प्रधान गीतिकाव्य है। 'मधुशाला', 'मधुवाला', 'मधुकलश' उनका मधुकाव्य है जो प्रेम तथा मस्ती से ओत–प्रोत है। 'मधुकलश' में कहीं क्षोभ, आक्रोष तथा संघर्ष का वर्णन हुआ है। 'निषा–निमन्त्रण', 'एकान्त–संगीत', 'आकुल–अन्तर', 'हलाहल' वेदना और निराषा का काव्य है। 'सतरंगिनी', 'मिलनयामिनी', 'प्रणय–पत्रिका', 'आरती और अंगारे, रामगमय उल्लास और प्रणय के काव्य हैं। 'धार के इधर–उधर', 'बंगाल का काल', 'खादी के फूल', 'सूत की माला', राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत काव्य है।

बच्चन का परवर्ती काव्य– सामाजिक चेतना, चिन्तन प्रधान, मुक्तक छन्द से ओत–प्रोत काव्य है। 'बुद्ध' और नाचघर', 'जाल–समेटा' यथार्थ युगचेतना का काव्य है। बच्चन की काव्य चेतना सहज–सरल गति से विकसित हुई हे। उन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा को एक धार में बहाने का प्रयत्न नहीं किया है बल्कि उसे वैयक्तिक जीवन और युग जीवन दोनों की धारा के साथ स्वतः प्रभावित होने दिया। 'नीड़ का निर्माण फिर' में बच्चन स्वयं लिखते हैं, ''मैंने अपनी प्रतिभा को यदि वह मुझमें है या जो कुछ मुझमें है उसे चैनेलाइज करने, एक धार में बहाने का प्रयत्न नहीं किया वह स्वतः जिधर गई है मैंने उसे जाने दिया है।''[3] बच्चन के काव्य में प्रणय भावना आस्थाजन्य है। उनके प्रणय में आस्था अथवा आस्तिकता का विशेष महत्त्व है। 'मधुशाला' में वे कहते हैं :–

''पहले भाग लगा लूं तेरा, फिर प्रसाद जग पाएगा,
सबसे पहले तेरा स्वागत, करती मेरी मधुशाला।''[4]

बच्चन ने अपने जीवन की थाह पा ली थी। इसलिए वे मानते थे कि इन्सान को ईश्वर से प्यार करना चाहिए। वे ईश्वर और मनुष्य का सम्बन्ध इस प्रकार स्थापित करते हैं :–

''प्यार ईश्वर को ही किया जा सकता है,
और ईश्वर ही करा भी सकता है।
और शायद ईश्वर ही कर सकता है।
हाँ, यह भी जाना है कि कभी ईश्वर–मनुष्य
और मनुष्य ईश्वर बनता है।''[5]

यहां पर ईश्वर को परम–सत्ता माना है।

'हिन्दू–मुस्लिम' एकता को इस प्रकार व्यक्त करते हैं:–

''मुसलमान और हिन्दू हैं दो, एक मगर उनका प्याला,
एक मगर उनकी मदिरालय, एक मगर उनकी हाला,
दोनों रहते एक न जब तक, मन्दिर–मजिस्द में जाते,
बैर कराते मन्दिर–मजिस्द, मेल कराजी मधुशाला।''[6]

सभी धर्मों को वे समानता की दृष्टि से देखते हैं।

बच्चन देशवासियों को प्रेरित करते हुए कहते हैं :–

''कि जो स्वदेश के चतुर सुजान हैं,
कि जो स्वदेश के चतुर प्रधान हैं,

[3] बच्चनः नीड़ का निर्माण फिर, पृ0–337
[4] बच्चनः 'मधुशाला, पृ0–11, रूबाई–1
[5] बच्चनः मेरी श्रेष्ठ कविताएं (कटती प्रतिमाओं की आवाज) पृ0–111
[6] बच्चनः मधुशाला, रूबाई–50, पृ0 70

कि जो स्वदेश के निगाहवान हैं,
उन्हें अचूक
दिव्य दृष्टि
प्राप्त हो।''[7]

यहां पर स्वदेश के शासकों को, देशप्रेमियों को देश के प्रति दिव्य–दृष्टि रखने की प्रेरणा देते हैं।

बच्चन के काव्य में सत्य और अहिंसा का विशेष महत्त्व रहा हैः–

सत्य अहिंसा बन अन्तर्राष्ट्रीय जागरण
मानवीय स्पर्शों से भरते हैं भू के व्रण
झुका तड़ित–अणु के अश्वों को, कर आरोहण
नव मानवता करती गाँधी का जय जय घोषण।''

मानव जीवन में अहिंसा के बिना सत्य को प्राप्त करना असम्भव है। जो व्यक्ति अहिंसा के रास्ते चल पड़ता है, उसे स्वयं ही परस सत्य की प्राप्ति हो जाती है।

बच्चन ने अपने काव्य में श्रेष्ठ राजनेताओं के प्रति अगाध प्रेम और श्रद्धा व्यक्त की है। अपने काव्य में महत्वपूर्ण वर्णन किया है। 'महात्मा गाँधी' 'जवाहर लाल नेहरू', 'सरदार वल्लभ भाई पटेल' आदि राज नेताओं के प्रति श्रद्धा–भावना व्यक्त की है। उन्होंने भ्रष्ट राजनीतिज्ञों, साहित्यकारों तथा सम्पादकों पर करारा व्यंग्य व्यक्त किया है।

बच्चन की भाषा जनभाषा है, इसलिए जनता को अपनी ही भाषा लगती है। उनके काव्य के कारण उनका और जनता का सीधा, प्रगाढ़ सम्बन्ध स्थापित हुआ है। इसलिए वे जनता के कवि कहलाए और लोकप्रिय हुए। आधुनिक भाषा को समृद्धि प्रदान करने का श्रेय बच्चन को जाता है।

निष्कर्ष :– हिन्दी साहित्य जगत के छायावादोत्तर काव्य मे बच्चन का नाम अत्यन्त जाना पहचाना नाम है। कल्पनाओं को रंग देने वाले व लेखनी से रंग भरने वाले भावो की कोमल अभिव्यक्ति करने वाले कवि बच्चन हिन्दी काव्य जगत में एक अविस्मरणीय स्थान रखते हैं। बच्चन छावावादोत्तर काल के अन्य कवियों से भिन्न हैं। उनका उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व सदैव प्रेरणाप्रद रहेगा। गीति काव्य परम्परा को नया आयाम बच्चन ने दिया है। वह हिन्दी पाठकों के लिए एक अमूल्य देन है। बच्चन के साहित्य के विषय में 'सुमित्रानन्दन पन्त' लिखते है, बच्चन का व्यक्तित्व हिन्दी काव्य में अदभुत विशेषता एवं महत्त्व रखता है।

वह मानव हृदय–मर्मज्ञ, रससिद्ध गायक, भाव धनी कवि एवं युग प्रबुद्ध संदेशवाहक है। उनके कला शिल्प में सादगी, स्वच्छता, संयम तथा अतुल शक्ति है। संगीत सम्मोहक तथा कल्पना की उड़ान प्राणी की संजीवनी से भरी होती है। बच्चन मुख्यतः मानव भावना, जीवन संघर्ष के आत्मनिष्ठ कवि हैं मैंने कभी उनके लिए ठीक ही लिखा था –

''अमृत हृदय में गरल कंठ में, मधु अधरों में,
आये तुम वीणा धर कर में जन–मन–मादन।''[8]

'भगवतीचरण वर्मा' के अनुसार, 'हिन्दी कवियों में जिसे मैं सबसे अधिक निकटस्थ पाता हूँ वह बच्चन हैं। उनकी कला निष्कपट और निश्चल है। उनकी कला में बौद्धिक सजावट नहीं है और न ही ज्ञान और दर्शन की कोई आरोपित स्थापना है। उनमें भावना स्वाभिक आवेग है और इसलिए वह पढ़ने वाले को तन्मय करती है। वर्तमान हिन्दी कविता को श्रेष्ठतम विश्व साहित्य के समक्ष लाने में जिन कवियों का योगदान हुआ है उनमें बच्चन का विशिष्ट स्थान है।''[9]

अतः यह कहना उचित है कि छायावादोत्तर हिन्दी कविता की अब तक जितनी उपलब्धि हुई है उसमें काव्य के लिए बच्चन का सबसे श्रेष्ठतम योगदान है। उन्होंने हिन्दी साहित्य संसार को समृद्धि प्रदान की है, हिन्दी काव्य जगत् में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है।

[7] बच्चनः धार के इधर–उधर, पृ0–70
[8] निधि मालवीय : हरिवंशराय बच्चन की आत्माभिव्यक्ति, पृ0–48–49
[9] भगवती चरण वर्माः बच्चन व्यक्ति और कवि, पृ0–71

(संक्षेपिका)

छायावादोत्तर काल के प्रमुख स्तम्भ डॉ0 हरिवंशराय बच्चन का जन्म 27 नवम्बर 1907 को इलाहाबाद में हुआ। इनका घरेलू नाम 'बच्चन' रखा गया। 'बच्चन' शब्द अवधी भाषा का है। जिसका अर्थ है– बछड़ा। अपनी माँ के द्वारा दिए गए नाम को बच्चन ने अपने साहित्य में अपना लिया। मधुकाव्य लिखने के बाद बच्चन जन–जन के कवि बन गए। बच्चन ने अपने काव्य से सारी दुनिया को मदहोष कर दिया। अपने काव्य सृजन से लोगों के दिलों में जगह बना ली। हर व्यक्ति इनके काव्य रस में डूबता चाहता है।

छायावादोत्तर काव्य आधुनिक सृजनशीलता की श्रेष्ठतम उपलब्धि है। राष्ट्रीय चेतना और जवानी की मस्ती इस काव्य की विशेषताएं हैं। ये दोनों ही विशेषताएं बच्चन के काव्य में समग्र रूप से झलकती हैं। बच्चन का काव्य छायावादोत्तर काव्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। उनके काव्य में कहीं निराशा है, कहीं राष्ट्र के प्रति उग्र राष्ट्रीय चेतना तथा कहीं श्रेष्ठ राजनेताओं का वर्णन और कहीं पर भ्रष्ट राजनेताओं पर करारा तीखा व्यंग्य किया है।

बच्चन का छायावादोत्तर काव्य में अद्वितीय योगदान रहा है। यदि हम बच्चन के गद्य साहित्य को अनदेखा कर दें तो भी उनका काव्य ही छायावादोत्तर हिन्दी साहित्य में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बच्चन के काव्य में गीतितत्त्व का विशेष महत्त्व है। कल्पनाओं को रंग देने वाले व लेखनी से रंग भरने वाले भावों की कोमल अभिव्यक्ति करने वाले कवि बच्चन हिन्दी काव्य जगत् में एक अविस्मरणीय स्थान रखते हैं। उन्होंने गीति काव्य परम्परा को नया आया दिया है। वह हिन्दी पाठकों के लिए एक अमूल्य देन है।

अन्ततः कहा जा सकता है कि बच्चन मानव हृदय–मर्मज्ञ, रससिद्ध गायक, भावधनी कवि, युग प्रबुद्ध संदेशवाहक हैं। उनकी कला शिला में सादगी, स्वच्छता, संयम तथा अतुल शक्ति है। संगीत सम्मोहक तथा कल्पना की उड़ान प्राणों की संजीवनी से भरी होती है। अतः छायावादोत्तर हिन्दी कविता की अब तक जितनी उपलब्धि हुई है। उसमें काव्य के लिए बच्चन का सबसे श्रेष्ठतम योगदान है। उन्होंने हिन्दी साहित्य संसार को समृद्धि प्रदान की है। हिन्दी काव्य जगत् में बच्चन का महत्त्वपूर्ण तथा अद्वितीय योगदान है।